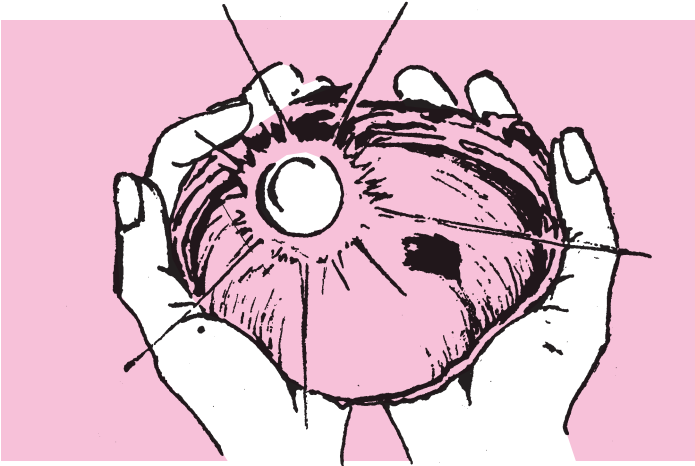


अनमोल मोती !



हमारे देश के पश्चिमी समुद्र-तट पर एक गाँव में साबू नामक गोताखोर रहता था। उसका काम समुद्र में मोती ढूँढना था। वह अब बूढ़ा हो चला था और एक छोटी सी झोपड़ी में रहता था। वह अकेला था।

एक दिन जब बहुमूल्य मोतियों की खोज करने के बाद साबू अपनी नाव में लौट रहा था तो किनारे पहुँचने पर उसकी दृष्टि समीप खड़े एक व्यक्ति पर जा टिकी। यह व्यक्ति उसका चिरपरिचित व्यापारी मित्र था जिसके साथ बैठकर वह प्रायः बातें किया करता था। यद्यपि साबू स्वयं गैर-मसीही था तथा उसका मित्र मसीही था, लेकिन उनका आपसी संबंध बहुत ही अच्छा था। नाव किनारे लगते ही दोनों मित्रों ने एक दूसरे का अभिवादन किया और फिर दोनों गम्भीरता से बातें करते हुए गाँव की ओर चल पड़े।

व्यापारी-मित्र ने पूछा—“साबू, गोताखोरी की क्या यह तुम्हारी आखिरी यात्रा थी?” साबू ने बताया—“अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ और बहुमूल्य मोतियों को खोजने समुद्र के तल में गोताखोरी करने नहीं जा सकूँगा। अपने जीवन की अन्तिम इच्छा पूरी करने मैं तीर्थयात्रा पर पवित्र नगर काशी जाना चाहता हूँ ताकि पवित्र गंगा में स्नान कर सकूँ। इस दिन की मैं वर्षों से प्रतीक्षा कर रहा था, और मुझे प्रसन्नता है कि वह दिन आ गया है।”

साबू के मित्र ने हमेशा की तरह फिर एकबार साबू को प्रभु यीशु मसीह का अद्भुत सुसमाचार बताया और समझाते हुए कहा कि तीर्थों में स्नान करने से कभी भी पाप नहीं धोया जा सकता। पाप तो केवल प्रभु यीशु मसीह के पवित्र लहू से ही धुल सकता है, क्योंकि प्रभु यीशु ने अपने आपको क्रूस पर इसलिये बलिदान किया ताकि हमारे पापों का दण्ड अपने देह पर उठाकर हमें पाप से क्षमा प्रदान कर सकें।

साबू ने मजाक उड़ाते हुए उत्तर दिया—“यह बात तो पहले भी कई बार सुन चुका हूँ। आपका धर्म तो इतना सरल है कि मैं विश्वास ही नहीं कर सकता। अपने उद्धार-प्राप्ति के लिए मैं स्वयं प्रयास और परिश्रम करूँगा ताकि उस उद्धार की कीमत को मैं जान सकूँ।” अब दोनों व्यक्ति साबू के घर पहुँच चुके थे। साबू ने विनयपूर्वक अपने मित्र को घर में आमन्त्रित किया।

साबू ने कहा—“मेरे पास आपके लिए एक भेंट रखी है, जिसे मैं आपको देना चाहता हूँ ताकि मेरे संसार छोड़ने के बाद भी आप मुझे याद कर सकें।” इसके बाद साबू झोपड़ी के एक कोने में कुछ देर ढूँढने के बाद कपड़े में लिपटी गेंद जैसी कोई वस्तु हाथ में लेकर लौटा। लिपटे हुए कपड़े को हटाने के बाद साबू की हथेली पर एक अत्यन्त सुन्दर मोती था। मोती को देखते ही उसके मित्र ने आश्चर्यचकित होकर कहा—“कितना सुन्दर मोती है। यह तो एक राजा की छुड़ौती के बराबर है।” फिर साबू ने धीमे स्वर से कहा—“हाँ यह इतना सुन्दर मोती है कि इससे पहले मैंने भी ऐसा मोती नहीं देखा था। परन्तु जैसा आप जानते हैं, मेरा भी एक अकेला बेटा था जो मेरी तरह समुद्र में मोती ढूँढा करता था। एक दिन समुद्र में मोती ढूँढते हुए वह बहुत गहराई तक चला गया। यद्यपि वह बहुत ही कुशल गोताखोर था, पानी का दबाव सहनशक्ति से बहुत अधिक होने के

कारण उसके फेफड़े क्षतिग्रस्त हो गए और तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। यह मोती मेरे बेटे को उसी गोताखोरी में मिला था। इसे प्राप्त करने में मेरे बेटेकी जान चली गई, परन्तु अब मैं आपको भेंटस्वरूप यही मोती देना चाहता हूँ।

व्यापारी मित्र ने कहा—“क्या आप मुझे इस कीमती मोती को भेंटस्वरूप देंगे। कभी नहीं, बिना खरीदे मैं आपसे इसे कदापि नहीं लूंगा। मुझे चाहे पैसा उधार लेना पड़े, मैं किसी प्रकार से मूल्य देकर ही आपसे इसे लूंगा। मैं इसे उपहारस्वरूप कभी भी स्वीकार नहीं करूँगा।” साबू ने धीमी आवाज में कहा—“महाशय, आप यह मोती पैसा देकर नहीं खरीद सकते। यह तो अनमोल है, मेरे बेटे ने इसके लिए अपनी जान दी है।

व्यापारी मित्र ने साबू से कहा—“अभी तो आपने स्वयं कहा था कि मसीहियत बहुत ही सरल है और मैं अपने उद्धार को कुछ प्रयास तथा परिश्रम करके स्वयं प्राप्त करूँगा। मित्र, क्या आप नहीं जानते कि आपको पापों के दण्ड से बचाने के लिए परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह को अपनी जान देनी पड़ी? वे क्रूस पर भयंकर दुख सहकर बलिदान हो गए ताकि आष उद्धार पा सकें। इस मोती के लिए आपके बेटे ने जान दे दी और यह आपके लिए अनमोल है। उसी प्रकार जिस मुक्ति तथा क्षमा लिए परमेश्वर के पुत्र ने अपना प्राण बलिदान कर दिया, उसे आप कैसे खरीद सकते हैं या अपने कर्मों, प्रयत्नों या किसी अन्य योग्यता के कारण प्राप्त कर सकते हैं?”

इस बात को सुनकर साबू की आँखों में आँसू बहने लगे और वह दूर आकाश की ओर दृष्टि किए हुए फुसफुसाकर कहे जा रहा था, “कितना अनोखा है यह प्रेम कि यीशु मेरे लिए मारा गया।” फिर सिर झुकाकर साबू ने प्रार्थना किया और प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया। तब उसके मित्र ने पवित्रशास्त्र निकालकर यह भाग पढ़कर उसे सुनाया—“क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा” (रोमियों ५:६)। “और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अपना जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं (१ यूहन्ना ५:११-१२)।

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे” (इफिसियों २:८-९)।

यदि आप इस विषय में अधिक जानकारी चाहते हैं तो निम्न पते पर सम्पर्क करें :

**क्योंकि जब हम
निर्बल ही थे,
तो मसीह
ठीक समय पर
भक्तिहीनों के
लिये मरा।**

रोमियों ५:६

The Light of Hope • Cheppad P.O.

Alappuzha Dist - 690 507 • Kerala State, India